

श्रीमज्जैनविशुद्धशासनरता जाताः सुभक्त्या श्रिये
भव्यैश्चापि परैर्जिनेन्द्रकथिते धर्मेऽत्र कार्या मतिः ॥३६॥

इति कथाकोशे दृढसूर्यचोरस्य कथा समाप्ता ।

२४. यमपालचाण्डालस्य कथा

प्रणम्य श्रीजिनाधीशं शर्मदं धर्महेतवे। मातङ्गः पूजितो देवैस्तच्चरित्रं सतां ब्रुवे ॥१॥
वाणारस्यां महापुर्यां राजाभूत्याकशासनः। एकदासौ निजे देशे पीडां श्रुत्वातिदारुणाम् ॥२॥
शान्त्यर्थं कार्तिके मासे शुक्ले नन्दीश्वरोत्सवे। अष्टम्यादिदिनान्यष्टौ जीवामारिप्रघोषणाम् ॥३॥
दापयामास भूभर्ता प्रजानां हितकारकः। तदा श्रेष्ठिसुतः पापी सप्तव्यसनतत्परः ॥४॥
धर्मनामा महोद्याने राजकीयं च मेढ्रकम्। हत्वा प्रच्छन्नतः शीघ्रं भक्षयित्वा च तत्पलम् ॥५॥

पवित्र जिनशासन के श्रद्धानी हुए। इसी तरह धर्मात्माओं को भी उचित है कि वे अपने आत्महित के लिए भक्तिपूर्वक जिनभगवान् द्वारा उपदिष्ट धर्म में अपनी बुद्धि को स्थिर करें ॥३६॥

२४. यमपाल चाण्डाल की कथा

मोक्ष सुख के देने वाले श्री जिनभगवान् धर्म प्राप्ति के लिए नमस्कार कर मैं एक ऐसे चाण्डाल की कथा लिखता हूँ, जिसकी कि देवों तक ने पूजा की है ॥१॥

काशी के राजा पाकशासन ने एक समय अपनी प्रजा को महामारी से पीड़ित देखकर ढिंढोरा पिटवा दिया कि “नन्दीश्वरपर्व में आठ दिन पर्यन्त किसी जीव का वध न हो। इस राजाज्ञा का उल्लंघन करने वाला प्राणदंड का भागी होगा।” वही एक सेठ पुत्र रहता था। उसका नाम तो था धर्म, पर असल में वह महा अधर्मी था। वह सात व्यसनों का सेवन करने वाला था। उसे मांस खाने की बुरी आदत पड़ी हुई थी। एक दिन भी बिना मांस खाये उससे नहीं रहा जाता था। एक दिन वह गुप्त रीति से राजा के बगीचे में गया। वहाँ एक राजा का खास मेढ्रा बँधा करता था। उसने उसे मार डाला और उसके कच्चे ही मांस को खाकर वह उसकी हड्डियों को एक गड्ढे में गाड़ गया। सच है— व्यसनी मनुष्य नियम में पाप में सदा तत्पर रहा करते है ॥२-६॥

दूसरे दिन जब राजा ने बगीचे में मेढ्रा नहीं देखा और उसके लिए बहुत खोज करने पर भी जब उसका पता नहीं चला, तब उन्होंने उसका शोध लगाने को अपने बहुत से गुप्तचर नियुक्त किए। एक गुप्तचर राजा के बाग में भी चला गया। वहाँ का बागमाली रात को सोते समय सेठ पुत्र के द्वारा मेंढे के मारे जाने का हाल अपनी स्त्री से कह रहा था, उसे गुप्तचर ने सुन लिया। सुनकर उसने महाराज से जाकर सब हाल कह दिया। राजा को इससे सेठ पुत्र पर बड़ा गुस्सा आया। उन्होंने कोतवाल को बुलाकर आज्ञा की कि, पापी धर्म ने एक तो जीव हिंसा की और दूसरे राजाज्ञा का

तदस्थीनि च गर्तायां निक्षिप्य गतवान्कुधीः। व्यसनेन युतो जीवः सत्यं पापपरो भवेत् ॥६॥
मेढ्रकादर्शने तत्र पाकशासनभूभुजा। सर्वत्र स्वपुरीमध्ये चराः शीघ्रं निरूपिताः ॥७॥
उद्यानपालको रात्रौ तदा गेहे स्वकामिनीम्। जगौ मेढ्रकवृत्तान्तं श्रेष्ठिपुत्रेण निर्मितम् ॥८॥
तां वार्तां च समाकर्ण्य चरः प्राह महीपतिम्। स राजा यमदण्डाख्यं कोट्टपालं क्रुधावदत् ॥९॥
धर्मकः श्रेष्ठिनः पुत्रः पापी धर्मपराङ्मुखः। कोट्टपाल त्वया शूला-रोहणं कार्यतामिति ॥१०॥
कोट्टपालेन तं नीत्वा शूलाभ्यर्णे च धर्मकम्। मातंगो यमपालाख्यः समाहूतः स्वकिंकरैः ॥११॥
सर्वोषधिमुनेः पार्श्वे मातङ्गेनैकदा मुदा। धर्ममाकर्ण्य जैनेन्द्रं लोकद्वयसुखप्रदम् ॥१२॥
चतुर्दशीदिने जीवं मारयामि न सर्वथा। एतद्व्रतं जगत्पूतं गृहीतं वर्तते पुरा ॥१३॥
यतश्चागच्छतो वीक्ष्य कोट्टपालस्य किंकरान्। मातंगो व्रतरक्षार्थं संजगाद स्वकामिनीम् ॥१४॥
प्रिये ग्रामं गतश्चेति वद त्वं किंकरान्प्रति। इति प्रोक्त्वा द्रुतं गेह-कोणेऽसौ संस्थितः सुधीः ॥१५॥
सा मातंगी तदा प्राह गतो ग्रामं मम प्रियः। तच्छ्रुत्वा सुभटैरुक्तं हा पापी दैववञ्चितः ॥१६॥
अद्वैवाभरणोपेतः श्रेष्ठिपुत्रस्य मारणे। गतो ग्रामं तदाकर्ण्य मातंग्या स्वर्णलोभतः ॥१७॥
गतो ग्रामामिति व्यक्तं पूत्कुर्वत्या च मायया। हस्तस्य संज्ञया शीघ्रं मातंगो दर्शितस्तया ॥१८॥

उल्लंघन किया है, इसलिए उसे ले जाकर शूली चढ़ा दो। कोतवाल राजाज्ञा के अनुसार धर्म को शूली के स्थान पर लिवा ले गया और नौकरों को भेजकर उसने यमपाल चाण्डाल को इसलिए बुलाया कि वह धर्म को शूली पर चढ़ा दें क्योंकि यह काम उसी के सुपुर्द था। पर यमपाल ने एक दिन सर्वोषधिऋद्धिधारी मुनिराज के द्वारा जिनधर्म का पवित्र उपदेश सुनकर, जो कि दोनों भवों में सुख का देने वाला है, प्रतिज्ञा कि थी कि— ॥७-१२॥

मैं चतुर्दशी के दिन कभी जीवहिंसा नहीं करूँगा। इसलिए उसने राज नौकरों को आते हुए देखकर अपने व्रत की रक्षा के लिए अपनी स्त्री से कहा—प्रिये, किसी को मारने के लिए मुझे बुलाने को राज-नौकर आ रहे हैं, सो तुम उनसे कह देना कि घर में वे नहीं हैं, दूसरे ग्राम गए हुए हैं। इस प्रकार वह चाण्डाल अपनी प्रिया को समझाकर घर के एक कोने में छुप रहा। जब राज-नौकर उसके घर पर आए और उनसे चाण्डालप्रिया ने अपने स्वामी के बाहर चले जाने का समाचार कहा, तब नौकर ने बड़े खेद के साथ कहा—हाय! वह बड़ा अभागा है। दैव ने उसे धोखा दिया। आज ही तो एक सेठ पुत्र के मारने को मौका आया था और आज ही वह चल दिया। यदि वह आज सेठ पुत्र को मारता तो उसे उसके सब वस्त्राभूषण प्राप्त होते। वस्त्राभूषण का नाम सुनते ही चाण्डालिनी के मुँह में पानी भर आया। वह अपने लोभ के सामने अपने स्वामी का हानि-लाभ कुछ नहीं सोच सकी। उसने रोने को ढोंग बनाकर और यह कहते हुए, कि हाय वे आज ही गाँव को चले गए, आती हुई लक्ष्मी को उन्होंने पाँव से ठुकरा दी, हाथ के इशारे से घर के भीतर छुपे हुए अपने स्वामी को बता दिया। सच है— ॥१३-१८॥

स्त्रीणां स्वभावतो माया किं पुनर्लोभकारणे । प्रज्वलन्नपि दुर्वह्निः किं वाते वाति दारुणे ॥१९॥
 गृहान्निःसारितः सोपि चाण्डालः सुवचो जगौ । प्राणत्यागेऽपि जीवोऽद्य मार्यते न मया ध्रुवम् ॥२०॥
 राजाग्रेऽपि भटैर्नीतो मातंगो धीरमानसः । जीवघाते चतुर्दश्याम् नियमोस्ति मम प्रभो ॥२१॥
 मारयामि हि ततो नैव जीवमद्यैवमब्रवीत् । यस्य धर्मे सुविश्वासः क्वापि भीतिं न याति सः ॥२२॥
 श्रेष्ठिपुत्रमहादोषात्ततो रुष्टेन भूभुजा । क्षिप्येते द्वावपि प्रोक्तं शिशुमारहृदे द्रुतम् ॥२३॥
 ततस्तौ कोट्टपालेन यमदण्डेन तेन च । निक्षिप्तौ द्वावपि क्रूरैर्जन्तुभिः संकुले हृदे ॥२४॥
 धर्महीनः स धर्माख्यो भक्षितः शिशुमारकैः । मातंगो यमपालोसौ निश्चलो व्रतरक्षणे ॥२५॥
 तदा तद्व्रतमाहात्म्यात्महाधर्मानुरागतः । सिंहासने समारोप्य देवताभिः शुभैर्जलैः ॥२६॥
 अभिषिञ्च्य प्रहर्षेण दिव्यवस्त्रादिभिः सुधीः । नाना रत्नसुवर्णाद्यैः पूजितः परमादरात् ॥२७॥
 तं प्रभावं समालोक्य राजाद्यैः परया मुदा । अभ्यर्चितः स मातंगो यमपालो गुणोज्ज्वलः ॥२८॥
 इत्थं ज्ञात्वा महाभव्यैः स्वर्गमोक्षसुखप्रदे । धर्मे श्रीमज्जिनेन्द्रोक्ते मतिः कार्या सदा मुदा ॥२९॥

स्त्रियाँ एक तो वैसे ही मायाविनी होती है, और फिर लोभादि का कारण मिल जाये तब तो उनकी माया का कहना ही क्या? जलती हुई अग्नि वैसे ही भयानक होती है और यदि ऊपर से खूब हवा चल रही हो तब फिर उसकी भयानकता का क्या पूछना? ॥१९॥

यह देख राज-नौकरों ने उसे घर से बाहर निकाला । निकलते ही निर्भय होकर उसने कहा-आज चतुर्दशी है और मुझे आज अहिंसाव्रत है, इसलिए मैं किसी तरह, चाहे मेरे प्राण ही क्यों न जायें कभी हिंसा नहीं करूँगा । यह सुन नौकर लोग उसे राजा के पास लिवा ले गए । वहाँ भी उसने वैसा ही कहा । ठीक है-जिसका धर्म पर दृढ़ विश्वास है, उसे कहीं भी भय नहीं होता ॥२०-२२॥

राजा सेठ पुत्र के अपराध के कारण उस पर अत्यन्त गुस्सा हो ही रहे थे कि एक चाण्डाल की निर्भयपने की बातों ने उन्हें और भी अधिक क्रोधी बना दिया । एक चाण्डाल को राजाज्ञा का उल्लंघन करने वाला और इतना अभिमानी देखकर उनके क्रोध का कुछ ठिकाना न रहा । उन्होंने उसी समय कोतवाल की आज्ञा की कि जाओ, इन दोनों को ले जाकर अपने मगरमच्छादि क्रूर जीवों से भरे हुए तालाब में डाल आओ । वही हुआ । दोनों को कोतवाल ने तालाब में डलवा दिया । तालाब में डालते ही पापी धर्म को तो जल जीवों ने खा लिया । रहा यमपाल, सो वह अपने जीवन की कुछ परवाह न कर अपने व्रतपालन में निश्चल बना रहा । उसके उच्च भावों और व्रत के प्रभाव से देवों ने आकर उसकी रक्षा की । उन्होंने धर्मानुराग से तालाब में ही एक सिंहासन पर यमपाल चाण्डाल को बैठाया, उसका अभिषेक किया और उसे खूब स्वर्गीय वस्त्राभूषण प्रदान किए, खूब उसका आदर सम्मान किया । जब राजा प्रजा को यह हाल सुन पड़ा, तो उन्होंने भी उस चाण्डाल का बड़े आनन्द और हर्ष के साथ सम्मान किया । उसे खूब धन दौलत दी । जिनधर्म का ऐसा अचिन्त्य प्रभाव देखकर और भव्य पुरुषों को उचित है कि वे स्वर्ग-मोक्ष का सुख देने वाले जिनधर्म में

चाण्डालोऽपि व्रतोपेतः पूजितो देवतादिभिः। तस्मादन्यैर्न विप्राद्यैर्जातिगर्वो विधीयते ॥३०॥
मातंगो यमपालको गुणरतैर्देवादिभिः पूजितो नाना वस्त्रसुवर्णरत्नविकसत्पुष्पोत्करैः सादरम्।
यद्धर्मस्य हि लेशतोपि भुवने स श्रीजिनः सक्रियाद्भक्त्या देवनिकायपूजितपदद्वन्द्वो महाश्रेयसे ॥३१॥

इति कथाकोशे यमपालचाण्डालस्य कथा समाप्ता।

समाप्तः प्रथमो भागः।

अपनी बुद्धि को लगावें स्वर्ग के देवों ने भी एक अत्यन्त नीच चाण्डाल का आदर किया, यह देखकर ब्राह्मण, क्षत्रिय और वेश्यों को अपनी-अपनी जाति का कभी अभिमान नहीं करना चाहिए क्योंकि पूजा जाति की नहीं होती किन्तु गुणों की होती है ॥२३-३०॥

यमपाल जाति का चाण्डाल था, पर उसके हृदय में जिनधर्म की पवित्र वासना थी, इसलिए देवों ने उसका सम्मान किया, उसे रत्नादिकों के अलंकार प्रदान किए; अच्छे-अच्छे वस्त्र दिये, उस पर फूलों की वर्षा की। यह जिनभगवान् के उपदिष्ट धर्म का प्रभाव है, वे ही जिनेन्द्रदेव, जिन्हें कि स्वर्ग के देव भी पूजते हैं, मुझे मोक्षश्री प्रदान करें। यह मेरी उनसे प्रार्थना है ॥३१॥

॥ इति आराधना कथाकोश प्रथम खण्ड ॥



द्वितीयखण्डम्

२५. मृगसेनधीवरस्य कथा

नत्वा श्रीमज्जिनं भक्त्या केवलज्ञानलोचनम्। वक्ष्येऽहिंसाफलप्राप्त-धीवरस्य कथानकम् ॥१॥
जयत्वत्रार्हती वाणी सर्वसन्देहहारिणी। प्राणिनां प्राणवत्प्रीत्या सेविता शर्मकारिणी ॥२॥
सन्तु मे गुरवो नित्यं मानसे बोधसिन्धवः। घोरसंसारवार्ताशे-र्भव्यानां यत्र सेतवः ॥३॥
इत्यर्हद्भारतीसाधु-पादस्मरणमंगलम्। कृत्वा करोमि कर्मारि-शान्तये सत्कथामहम् ॥४॥
या हिंसा सर्वजन्तूनां नामतोपि भयप्रदा। सा त्रेधा त्यज्यते सद्भिर्हिंसा सांकल्पिकी सदा ॥५॥
पित्रर्थं देवतार्थं वा शान्त्यर्थं वात्र निर्मिता। शर्मणे न भवेद्धिंसा किन्तु दुष्कर्मणे मता ॥६॥
शृण्वन्तु सुधियो भव्या भवभ्रमणनाशनम्। अहिंसाव्रतमाहात्म्यं श्रेयसे शर्मकारणम् ॥७॥
अवन्तिविषये रम्ये सम्पदासारसंभृते। शिरीषग्रामवास्तव्यो धीवरो मृगसेनवाक् ॥८॥

२५. मृगसेन धीवर की कथा

केवलज्ञानरूपी नेत्र के धारक श्री जिनेन्द्र भगवान् को भक्तिपूर्वक प्रणाम कर मैं अहिंसाव्रत का फल पाने वाले एक धीवर की कथा लिखता हूँ ॥१॥

सब सन्देहों को मिटाने वाली, प्रीतिपूर्वक आराधना करने वाले प्राणियों के लिए सब प्रकार के सुखों को प्रदान करने वाली, जिनेन्द्र भगवान् की वाणी संसार में सदैव बनी रहे ॥२॥

संसाररूपी अथाह समुद्र से भव्य पुरुषों को पार कराने के लिए पुल के समान ज्ञान के सिन्धु मुनिराज निरन्तर मेरे हृदय में विराजमान रहें ॥३॥

इस प्रकार पंचपरमेष्ठी का स्मरण और मंगल करके कर्मरूपी शत्रुओं को नष्ट करने के लिए मैं अहिंसाव्रत की पवित्र कथा लिखता हूँ। जिस अहिंसा का नाम ही जीवों को अभय प्रदान करने वाला है, उसका पालन करना तो निस्सन्देह सुख का कारण है। अतः दयालु पुरुषों को मन, वचन और काय से संकल्पी हिंसा का परित्याग करना उचित है। बहुत से लोग अपने पितरों आदि की शान्ति के लिए श्राद्ध वगैरह में हिंसा करते हैं, बहुत से देवताओं को सन्तुष्ट करने के लिए उन्हें जीवों की बलि देते हैं और कितने ही महामारी, रोग आदि के मिट जाने के उद्देश्य से जीवों की हिंसा करते हैं परन्तु यह हिंसा सुख के लिए न होकर दुःख के लिए ही होती है। हिंसा द्वारा जो सुख की कल्पना करते हैं, यह उनका अज्ञान ही है। पाप कर्म कभी सुख का कारण हो ही नहीं सकता। सुख है अहिंसाव्रत के पालन करने में। भव्य जन! मैं आपको भव भ्रमण का नाश करने वाला तथा अहिंसाव्रत का माहात्म्य प्रकट करने वाली एक कथा सुनाता हूँ; आप ध्यान से सुनें ॥४-७॥

अपनी उत्तम सम्पत्ति से स्वर्ग को नीचा दिखाने वाले सुरम्य अवन्ति देश के अन्तर्गत शिरीष